DOIs:10.2018/SS/202412013 --:-- Research Paper / Article / Review

“रास्ते बंद नहीं होते” (कहानी संग्रह) : देशकाल एवं वातावरण

डॉ. भागीरथ खारडिया
सहायक आचार्य हिंदी
(विद्या संबल योजना) राजकीय कन्या महाविद्यालय,
गुड़ा, नीमकाथाना, राजस्थान
Email – bhagirathkhardiya@gmail.com

शोध सार: हमारे देश की भूमि जितनी मनोरम आकर्षक और हरितिमा से पूर्ण है, उतनी ही भावक, सहृदय और संदेदनशील प्राणियों को जन्म देने में समर्थ रही है। संसार के वातावरण से संतप्त मानव जीवन जब यहां कदम रखता है तब उसे एक सुखद अनुभूति और नैसर्गिक सुख का अपार आनन्द मिलता है। जीवन की निराशाओं से उबरकर यदि कभी मानव के चरण इधर पड जाते हैं जब उसे हठात ही जीवन के प्रति ममत्व एवं जीवन की पिपासा हो जाती है। यहां की भूमि में अनेकों कवियों, साहित्यकारों, कलाकारों, उपान्यासकारों आदि प्रतिभाओं ने जन्म पाकर संसार में यश प्राप्त किया। दूसरे शब्दों में साहित्यकार की रचना में युग-बोध और आत्म-बोध का सम्मिश्रण होता है।

बीज शब्द: कहानीकार, देशकाल एवं वातावरण, सामाजिक वातावरण, भारद्वाज।

1. परिचय :

प्रगतिशील कहानीकार के रूप में प्रख्यात साहित्यकार डा. हेतु भारद्वाज जी का जन्म 15 फरवरी, 1937 में उत्तर प्रदेश जिला बुलंद शहर के रामनेर गांव के एक निम्न वर्गीय परिवाह में हुआ। इनका पूरा नाम श्री होती लाल भारद्वाज है लेकिन साहित्य के क्षेत्र में भारद्वाज के नाम से प्रख्यात हुए है। इनके पिता डा. श्री खूबी राम शर्मा है वे एक अत्यन्त साधारण किन्तु उच्चादर्शों से युक्त दृढ चरित्र वाले व्यक्ति थे जिन्होने प्राईमरी स्कूल में अध्यापक का कार्य और जीवन भर आर्थिक विषमता से नही, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर भी निरंतर संघर्षो का सामना करते रहे। ऐसे जुझारू और स्वाभिमानी पिता की छत्र छाया में श्री भारद्वाज जी का बचपन बीता। इनके पिता स्वाभिमानी होने के कारण अपनी जिन्दगी नहीं झुके। चाहे उन्हे कितनी ही मुसीबतों का सामना करना पडा हो, चाहे कितने ही संघर्षो से जूझना पडा हो। अगर उन्हे कभी किसी से समझौता करना पडे तो पूरे सम्मान के साथ और अपनी शर्तों पर किया। एक वही आदमी अपने सच्चे स्वाभिमान की जीवन में रक्षा करता रहा। उन्होंने अपने अनमोल जीवन में कभी भी हार नही मानी।

2. भारद्वाज जी की परिवेशिय दृष्टि :-

"रास्ते बंद नहीं होते" के कहानीकार भी हेतु भारद्वाज जी नीम का थाना (सीकर) के रहने वाले हैं। वर्तमान में भी वहीं रहते हैं। प्रस्तुत संग्रह में इन्होंने ग्रामीण एवं शहरी परिवेश को चुनते हुए इन कहानियों का वातावरण परिवेश तैयार किया है और इसी परिवेश में से कहानियों का कथानक भी लिया है, क्योंकि भारद्वाज जी स्वंय एक ग्रामीण क्षेत्र में रहे

हुए हैं और ग्रामीण जीवन जिया है उसी ग्रामीण जीवन में रहते हुए आगे शहरीकरण की ओर बढे तथा शहरी परिवेश को भी चित्रित कर वहां की वातावरण शैली को दर्शाया है। उसमें रहने एवं काम करने वाले सदस्यों का परिचय परिवेश के अनुसार ही कराया है। जैसे राजनीति, गुण्डागर्दी एवं नौकरशाही, निर्धनता, धार्मिकता आदि का वर्णन किया है -
कुछ पंक्तियों में ही समुचित वातावरण का आभास करा पुनः हेतु भारद्वाज जी अपने कार्य की ओर बढ़ जाते हैं। ऐसा कई कहानियों में हुआ है। "मैंने नहर के पुल पर खड़े होकर देखा गांव रात के सन्नाटे में चुपचाप सो गया था। दिसबर का महीना था इसलिए शाम के आठ बजे ही ऐसा लगने लगा था कि रात काफी गुजर चुकी है।""
इस प्रकार के परिचायात्मक विवरणों से पाठक को कहानी विशेष की परिस्थितियों और वातावरण का सहज-समन्वित आभास मिलता है, और कहानी की गति बनी रहती है।
डा० हेतु भारद्वाज जी अपने जीवन में ही नहीं, साहित्य में भी उतने ही सहज, सोम्य और सादगी पसंद व्यक्ति है, जिन्हें कृत्रिमता कतई स्वीकार नहीं। यही कारण है कि इनकी कहानियों में ढूंढने पर भी कल्पना भी कल्पना की लंबी उड़ानों से युक्त प्रकृति-वर्णन, वातावरण निर्माण या पार्श्वभूमि की सृष्टि नहीं मिलती। उन्होंने अपनी कल्पना का समावेश उतना ही किया है जिससे पाठकों को कहानी सजीव होने के साथ-साथ रोचक भी प्रतीत हो।

3. देशकाल एवं वातावरण का तात्पर्य :-

"कहानी के 'देश और काल से हमारा तात्पर्य उसमें वर्णित आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन और परिस्थिति आदि से है।"
पात्र एवं घटनाओं को ठीक प्रकार से समझने के लिए उनकी परिस्थितियों को समझाना आवश्यक है। साहित्यकार अपनी रचनाओं में भूतकाल में जीता है, वर्तमान को भागता है और भविष्य के स्वप्न देखता है। किन्तु जिस समय-विशेष के पात्रों एवं घटनाओं का चित्रण कहानी में किया गया है उसकी राजनीति, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण करना कृति के प्रभाव को ओर भी गहरा कर देता है।
जिस कथानक को लेखक ने उठाया है उसका वातावरण तथा स्थितियों का युगानुकूल वर्णन कहानियों को जीवंत बनाता है। यह उसकी प्रमाणिकता के लिए आवश्यक है। यह सजगता आवश्यक है कि वे आस-पास के परिवेश को बहुत दृष्टि से चित्रित करें तथा वातातरण के अनुसार ही पात्रों की मनःस्थिति को उभारें। अतः स्पष्ट है कि कहानी में बिना देश काल एवं वातावरण के सजीवता लाना संभव नहीं है।

4. कहानियों में देशकाल एवं वातावरण की महत्ता :-

कहानियों में वातावरण एवं देशकाल का महत्व रीढ़ की मजबूती के महत्त्व की तरह होता है। उचित वातावरण का बल पाकर कथानक पुष्ट हो जाता है, पात्र सजीव हो उठते हैं, सम्भाषण एवं कथोपकथन अपने पूर्ण अर्थ में और अभिप्राय को व्यक्त करने में सफल रहता हैं। देश का अर्थ स्थान है, काल का अर्थ समय विशेष अर्थात जिस स्थान और काल विशेष की घटनाएँ कहानी में चित्रित की गई हैं।
कहानियों की रचना शिल्प में तात्विक दृष्टि से देशकाल एवं वातावरण का अद्वितीय स्थान है। अतः कहानीकार को चाहिए कि वह अपनी कहानियों में जिस स्थान
और काल विशेष की घटनाओं को चित्रित करता है, उसमें तत्युगीन परिस्थितियां, सामाजिक स्थितियों, रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान आदि से पूर्ण परिचय प्राप्त करके ही उन्हें लिखा जाना चाहिए अन्यथा कालगत दोष आने से

कहानीकार अपने लक्ष्य से च्युत हो जाता है और रचना का गौरव धूमिल हो सकता है। अतः स्पष्ट है कि कृति की स्वाभाविकता एवं जीवंता के लिए पृष्ठभूमि का अत्यधिक महत्व है।

इसी प्रकार प्रेमचंद जी ने लिखा है "वातावरण कहानी में इस प्रकार है जैसे दावत में पकवानों के रखने के बर्तन और भोजनशाला। हमारा ध्यान खाद्य पदार्थों पर अधिक होगा- बर्तनों पर कम। परन्तु खाद्य पदार्थों के अनुरूप ही पात्र भी होना चाहिए। हम दावत के वक्त भोजनों से अपना ध्यान हटाकर भोजनशाला या बर्तनों पर कभी जाने न देंगे। हाँ, अज्ञात रूप से उनका प्रभाव हमारे मन पर पड़ेगा और हम बड़ी प्रसन्नता से भोजन करेंगे। इसी प्रकार कहानी में वातावरण प्रधान ध्येय होता है।"

"रास्ते बंद नहीं होते" : देशकाल एवं वातावरण

देशकाल के भेद-प्रभेद भी किए गए हैं। इसके दो भेद हैं- (अ) सामाजिक और (ब) भौतिक। तो बाबू श्यामसुन्दर दास ने भी दो भेद बताए है- (अ) सामाजिक और (ब) ऐतिहासिक या सांसारिक। डॉ. प्रेमनारायण टंडन ने तीन भेद माने है- (अ) सामाजिक (ब) प्राकृतिक और (स) ऐतिहासिक ।'

वैसे कहानियों के स्थानीय रंग को भी वातावरण निर्माण में सहायक माना है।

सामाजिक वातावरणः-

सामाजिक वातावरण के निर्माण में वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, परंपराएँ पर्वोत्सव, भाषात्मक उच्चारण तथा अभिवादक आदि का प्रमुख योगदान रहता है।

वेश-भूषा:-

यह कहानी संग्रह राजस्थानी, ब्रज आदि प्रवेश का है। एक पल का सुख में होभा की वेश-भूषा वह दूल्हा बनने पर "सीधे हाथ में बालों की बंटी रस्सी में सुपारी ओर लोहे के छल्ले वाला कंगन, गले में पड़ी पेटी जिसमें बाई करवट लटकती कटार, कुरूम के न्यूकट जूते, चमकीले जुराब, सुपरफाइन की घोती, नीली पापलिन की कमीज और कत्थई रंग का सरज का डबल ब्रेस्ट का कोट, सिर पर गुलाबी साफा और उस पर बिलचिलाता मोहर, माथे पर बंधा झालदार सेहरा। खेमा आज कितना खुश था।'

"रात कूं देखिओ, मैया सोलहों सिंगार करके चौमुख ड्विरा जौरिके अपने भगतन पै दया बरसाबैगी"

रहन-सहन :-

इस संग्रह में रहन-सहन में एक गांव से लेकर शहर तक का चित्रण किया गया है:-

गांव जैसे कच्चे घर एवं गोधुली बेला पर सब एक जगह बैठकर चीलम पीना आदि गांवों में होता है। "फैंस का टापरा, ढीली ढीली खाट पर गन्दी गूदड़ी में लिपटा दुबला-पतला बूढा शरीर ! टापरे में बेतरतीब सॅवेरे माटी के छोटे-बड़े, घड़े। खाट के पास बरोसी में सुलगती आग से उठता धुओं। टापरे के सामने बाड़े में रम्भाती गाय। हल जोतकर लौटा विद्याधर। गाय और जोर से रम्भाने लगती है।"

"बहुत देर हो गई।" वह बोली, 'वाश कर लीजिए। चाय तैयार है। मैंने तुरत-फुरत दैनिक कार्य सम्पन्न किए और मैं जाने के लिए तैयार होने लगा। मैंने कहा, आरती में आज ही जाऊँगा।" उसने इतना ही कहा मैं खाना तैयार कर देती हूं।"

गांव के रीति-रिवाजों में आज भी यह वातावरण मिलता है कि मिल-जुलकर काम करते हैं जैसे- "अच्छा महावीर मैया जी। राम-राम भैयाजी। अब आये?" उनका स्वर सहज हो गया था, 'भैयाजी बख्त तेई आयौ करी। रात-विराट न चलो तो ठीक है।

पर्वोत्सव :-

पर्वोत्सव में होली का उल्लेख कहानी "जमीन से हटकर किया गया है। अन्य पर्वो में दशहरा, दीवाली आदि भी मनाए जाते हैं।

5. भाषात्मक उच्चारण एवं अभिवादक शैली:-

भाषात्मक उच्चारण एवं अभिवादक शैली भी वातावरण निर्माण में सहयोग देती है। जैसे भैयाजी, साबजी, बाबूजी, मैयाजी, लालाजी, मामाजी, पिताजी आदि। अभिवादन में प्रयुक्त शब्द आते हैं। वही राजस्थानी शब्द जैसे लुगाई, बाटा, गामरी, देस्सी, म्हाने, मर्द, बीणनी आदि राम-राम ये शब्द परिवेश को अभाशय में सफल रहते हैं।

प्राकृतिक वातावरण :- प्राकृतिक वातावरण का इस संग्रह में बहुत अधिक प्रयोग हुआ है। और जहाँ भी हुआ है वहाँ सफल भी रहा है, यथा :- "बरसात में नुकसान तो हमारे गाम में खूब हुयो है।'

"ब्लाक की वाउण्डरी में शीशम के बड़े-बड़े पेड़ लहरा रहे थे। नीचे सूखी पत्तियों ने जमीन रखी थी।"

"सरोवर के किनारे एक पीपल का वृक्ष था, खूब घना था और हरा-भरा. इस-हसिनी ने उसी पर अपना निवास बनाया। पीपल के वृक्ष पर रहते और जलाशय में विहार करते ।"

धार्मिक वातावरणः-धार्मिक वातावरण से संबंधित कहानियों में "तीर्थयात्रा' कहानी में इसका परिवेश अधिक मिलता है, इसमें कहानीकार की पत्नि के बारे में, माता की यात्रा का वर्णन मिलता है।

"मैय्या के दरबार में पदर ई जाणौ परै है बाबूजी। पर मैया की महमा में तो सवारी ऊ ते सबसे अधिक आनंद आवै है। आज तो शरद की पुण्यौं है। आज तो मैया मैया के सच्चा दरसन है सकई।। जरूर जाउ बाबूजी।" उनका स्वर श्रद्धा से उत्तम था।

आर्थिक वातावरणः- इस संग्रह में सामंत एवं नौकरशाही और ग्रामीण परिवेश का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इस संग्रह में अलग-अलग पैसों के पीछे कोई मुआवजा लेने के लिए कोई अपना स्टेण्डर्ड बढ़ाने के लिए आदि दौड़ते नजर आ रहे हैं।

कहानीकार ने एक ओर सम्पन्न शहरीकरण एवं एक तरफ गरीब ग्रामीण वर्ग को रखता है। उसी में एक क्लर्क से लेकर एक मजदूर तक का वर्णन इस संग्रह में चित्रित किया गया है। ऐसे ही कहानीकार ने इस संग्रह में आर्थिक वातावरण का निर्माण किया है-

"शादी के सात दिन पहले लगुन आई। लगुन स्वंय पं० रमानाथ जाकर लाए थे। लगुन से पहले ही एक हजार देना गंगी को तय हुआ था और यह रकम पं० रमानाथ की गंगी के पास पहुंचाने गए थे।"

थोड़ा स्टेण्डर्ड से भी रहना होता है, धोबी से कपड़े भी धुलाने पड़ते हैं। सबसे दुखी बेचारा वही है।"

"है तो, पर कल पिकनिक पर चलना है और शालें तो सबकी देखी हुई हैं' पत्नि ने समझाया। वह कुछ नहीं बोला।

"तुम ले आना। पसन्द नहीं आएगी तो वापस लौटा देंगे।"

"वह हुआ, जिसका उसे डर था। एंटीकरप्शन वालों ने उसे टैप कर लिया। यह उस समय की कारगुजारियों का परिणाम था जब वह बेहद इमानदार था।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि "रास्ते बंद नहीं होते' संग्रह में निरूपण एवं वातावरण निर्माण की दृष्टि से यह एक सफल कहानी संग्रह है। जिसमें राजस्थानी, ब्रज एवं मेवाती तथा अंग्रेजी के शब्दों के माध्यम से उभारा गया है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक वातावरण की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट कृति है।

6. निष्कर्ष :-

किसी भी कहानी संग्रह में देशकाल एवं वातावरण के बिना जीवन्तता नहीं लाई जा सकती। भारद्वाज जी देशकाल से सम्बन्धित परिवेशिक योजना के प्रति "रास्ते बंद नहीं होते" कहानी संग्रह के प्रति सजग रहे। भारद्वाज जी उन कहानीकारों में से हैं जिन्होंने परिवेश की संगतियों और विसंगतियों से सीधा साक्षात्कार किया है तथा अभिशप्त सामन्ती व्यवस्था के देशों की अनुभूतियों भोगी हैं। जीवन्त परिवेश अपने पूर्ण परंपराओं, रीतियों, विश्वासों के साथ उनकी कहानियों में उभरा है। "रास्ते बंद नहीं होते इसी दृष्टि का कहानी संग्रह है। जिसमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं प्राकृतिक वातावरण बखूबी उभारा है। तत्कालीन परिवेश के रीति-रिवाज, परम्परा, विश्वास आदि के चित्रण से कृति जीवन्त हो उठी है। अतः हम कह सकते हैं कि देशकाल एवं वातावरण की सृष्टि की दृष्टि से "रास्ते बंद नहीं होते" एक श्रेष्ठ कहानी संग्रह ठहरता है। जो लोकजीवन की पहचान एवं उसे शब्दबद्ध करने में सफल रहा हैं। जिससे यह कृति स्वाभाविक बन पड़ी हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. श्यामसुन्दर दास : साहित्यलोचन, प्रा. सं. 210
2. श्रीनारायण अग्निहोत्री : कथा तत्व एवं रूप विधान, पृ. सं. 131
3. डॉ. श्यामसुन्दर दास: साहित्यलोचन, पृ. सं. 172
4. डॉ. प्रेमनारायण टण्डन : हिन्दी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृ. सं.- 98
5. रास्ते बंद नहीं होते: एक पल का सुख, पृ. सं.-6
6. रास्ते बंद नहीं होते: तीर्थयात्रा, पृ. सं. 58
7. रास्ते बंद नहीं होते: जमीन से हटकर, पृ. सं. 20
8. रास्ते बंद नहीं होते: लौटते हुए, पृ. सं. 131
9. रास्ते बंद नहीं होते रिश्ता, पृ. सं. 152
10. रास्ते बंद नहीं होते गांव, पृ. सं.- 40
11. रास्ते बंद नहीं होते: रिसता हुआ जख्म, पृ. सं.- 98
12. रास्ते बंद नहीं होते: पंचायत राज, पृ. सं. 168
13. रास्ते बंद नहीं होते: तीर्थयात्रा, पू. सं. 55
14. रास्ते बंद नहीं होते: एक पल का सुख, पृ. सं. – 5
15. रास्ते बंद नहीं होते: गाड़ी का इंतजार, पृ. सं. 11
16. रास्ते बंद नहीं होते: जमीन से हटकर, पृ. सं. 24
17. रास्ते बंद नहीं होते: रास्ते बंद नहीं होते, पृ. सं- 136
18. रास्ते बंद नहीं होते: सुबह-सुबह, पृ. सं. 25
19. रास्ते बंद नहीं होते: गांव, पृ. सं. 40

20. रचनावली, खण्ड 5: मुक्ति बोध
21. मेरी रचना भूमिका: डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना
22. हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
23. हिन्दी कहानी - विधान एवं विकास रामजी पाण्डेय
24. कुछ विचार: मुंशी प्रेमचंद
25. नयी कहानी-संदर्भ और प्रकृति डॉ. देवीशंकर अवस्थी
26. मधुमती, 1982: नवल किशोर शर्मा
27. हिन्दी कहानी दो दशक डॉ. सुरेश धिंगाड़ा

पत्र-पत्रिकाएं

(1) इतवारी पत्रिका
(2) कादम्बिनी पत्रिका
(3) राजस्थान पत्रिका
(4) मधुमती पत्रिका
(5) समीक्षा पत्रिका
(6)दैनिक नवज्योति
(7) संचेतना पत्रिका
(8) दस्तावेज
(9) आज की कविता
(10) तटस्थ
(11) माजरा